#102
मस्जिद में--
पोस्ट:: 04

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त (4)

أَعُوْذُ بِاللهِ الْعَظِيْمِ، وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ ----

وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ

مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

और उस की सल्तनत की
(पनाह में जो) क़दीम है
शैतान से (जो) मरदूद है!

(अबू दावूद: 465, तिरमिज़ी: 314, इबने माजह: 771, 772)

- हमें अल्लाह की अज़्मत, उस के करम और उस की हमेशा हमेश रहने वाली सल्तनत के एहसासात के साथ अपने सब से बड़े दुश्मन से पनाह मांगना है! इस से यह बात भी पता चलता है के नमाज़ के वक़्त शैतान हमलों के लिए ख़ूब तैयार हो जाता है, इसलिए उस के हमलों से बचने के लिए अल्लाह की अज़ीम सिफ़ात और क़ुदरत को ज़ेहन में रखते हुए अल्लाह की पनाह में आना चाहिए!

#103
मस्जिद में--
पोस्ट:: 05

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त (5)

أَعُوْذُ بِاللهِ الْعَظِيْمِ، وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ ----

وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ

और उस की सल्तनत की (पनाह में जो) क़दीम है

مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

शैतान से (जो) मरदूद है!

(अबू दावूद: 465, तिरमिज़ी: 314, इबने माजह: 771, 772)

- अल्लाह अपनी पनाह मांगने वाले को नामुराद नहीं करता, उस को अकेला नहीं छोड़ता और न उसे वह दुश्मन के हवाले करता है!
- शैतान की सिफ़त को यहाँ याद करना है के वो मर्दूद है और वो चाहता है के हम भी मर्दूद हो जाएँ!

#104
मस्जिद में--
पोस्ट:: 06

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त (6)

أَعُوْذُ بِاللهِ الْعَظِيْمِ، وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ ----

وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ

और उस की सल्तनत की (पनाह में जो) क़दीम है

مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

शैतान से (जो) मरदूद है!

(अबू दावूद: 465, तिरमिज़ी: 314, इबने माजह: 771, 772)

- शैतान से पनाह में आना है और फिर उन सभी चीज़ों को भी ज़ेहन से हटाना है जिन के ज़रिए शैतान नमाज़ में खलल डालेगा। वरना शैतान से पनाह मांगना और फिर दुनियावी ख़यालात के साथ मस्जिद में दाखिल होना नमाज़ को ख़राब कर देगा!

#105
मस्जिद से--
पोस्ट:: 07

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त (7)

بِسْمِ اللّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ

अल्लाह के नाम से और दुरूद और सलाम (हो)

عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ---

अल्लाह के रसूल पर .....

(अबू दावूद: 465, तिरमिज़ी: 314, इबने माजह: 771, 772)

- पहले अल्लाह का नाम और उस के बाद प्यारे नबी ﷺ के लिए दुआ, क्यूंकि अल्लाह के फ़ज़ल के बाद आप ﷺ ही के ज़रिए हम को नमाज़ पढ़ना मालूम हुआ!
- नबी पर सलात का मतलब है कि ऐ अल्लाह! हज़रत मुहम्मद ﷺ पर रहमतों की बारिश फरमा, उन पर मेहरबान हो जा! और उन का नाम और दरजात बुलंद कर!
- नबी पर सलाम का मतलब है कि दुनिया में आप ﷺ के नाम पर कोई आंच ना आए और आख़िरत में भी आप को हर क़िसम की सलामती मिले!

#106
मस्जिद से--
पोस्ट:: 08

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त (8)

بِسْمِ اللهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ
عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ---

अल्लाह के नाम से और दुरूद और सलाम (हो)
अल्लाह के रसूल पर .....

(अबू दावूद: 465, तिरमिज़ी: 314, इबने माजह: 771, 772)

- रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद व सलाम भेजेगा, अल्लाह उसके बदले उस पर दस रहमतें नाज़िल फरमाएगा!" (मुस्लिम: 384)
- हज़रत मुहम्मद ﷺ की क़ुर्बानियों को याद करते हुए यह दुआ पढ़िए, ताकि यह दुआ दिल से निकले और हमें उस का भरपूर सवाब मिले!

#107
मस्जिद से--
पोस्ट:: 09

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त (9)

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

ऐ अल्लाह! खोल दे मेरे लिए दरवाज़े रहमत के तेरी!

(अबू दावूद: 465, तिरमिज़ी: 314, इबने माजह: 771, 772)

- मस्जिद में दाखिल होते वक़्त तसव्वुर कीजिए कि इस वक़्त मैं तो लकड़ी या लोहे वगैरह से बने हुए मस्जिद के दरवाजे से मस्जिद में दाखिल हो रहा हूँ; मगर असल खैर और कामयाबी यह है के मेरे लिए आल्लाह की रहमत के दरवाजे खुल जाएँ!

#108
मस्जिद से--
पोस्ट:: 10

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त (10)

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ
أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

ऐ अल्लाह! खोल दे मेरे लिए
दरवाज़े रहमत के तेरी!

(अबू दावूद: 465, तिरमिज़ी: 314, इबने माजह: 771, 772)

अल्लाह की रहमत के कई दरवाजे हो सकते हैं, जैसे नमाज़ में खुशू और ख़ुज़ू का नसीब होना, शैतानी वसवसों से हिफ़ाज़त, क़ुरआन की तिलावत, नमाज़ के अज़कार को समझना और नसीहत हासिल करना, नमाज़ से पहले और बाद के अज़कार का एहतेमाम करना, फ़रिश्तों की दुआओं का हासिल होना, नेक साथियों से मुलाक़ात और उनकी दुआएँ मिलना, वगैरह!

#109
मस्जिद से--
पोस्ट:: 01

मस्जिद से निकलते वक़्त (1)

بِسْمِ اللهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ

عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ---

अल्लाह के नाम से और दुरूद और सलाम (हो)

अल्लाह के रसूल पर .....

(अबू दावूद: 465, तिरमिज़ी: 314, इबने माजह: 771, 773)

- अल्लाह ने हमें नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ आता फ़रमाई, उस पर अल्लाह का शुक्र अदा कीजिए!
- नमाज़ कैसे पढ़ना है यह हमें रसूल ﷺ की तालीमात के ज़रिए पता चला, इस लिए रसूल ﷺ पर खूब दुरूद व सलाम भेजते रहिए!